International Journal of Applied Research 2017; 3(5): 694-698

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(5): 694-698
www.allresearchjournal.com
Received: 15-03-2017
Accepted: 18-04-2017

डॉ. प्रदीप कुमार
असिसटैंट प्रोफैसर, एम.आर सरकारी कॉलज, फाजिलका, पंजाब, भारत

Correspondence
डॉ. प्रदीप कुमार
असिसटैंट प्रोफैसर, एम.आर सरकारी कॉलज, फाजिलकां, पंजाब, भारत

सिक्ख गुरूओं के समय बीकानेर राज्य में सिक्ख धर्म का प्रचार

डॉ. प्रदीप कुमार

सारांश
वर्तमान कार्य एक महत्वूपर्ण कोशिश है जो राजपूतों और सिक्खों के सम्बन्धां पर ध्यान देगी। सिक्ख इतिहास के गहन अध्ययन से हमें यह पता चलता है कि भक्ति लहर के दो ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति हुए है, जिनका नाम धन्ना जाट और पीपा राजपूत था जो राजस्थान से समबिन्धत थे और उनका उनकी अपनी आध्यात्मिक कुशलता के कारण बहुत ख्याति प्राप्ति का भी सम्मान प्राप्त है। उनकी रचनाओं को सिक्ख धर्म की धार्मिक रचनाओं में भी स्थान प्राप्त है।

कूटशब्दः सिक्ख धर्म, राजपूतों, बीकानेर राज्य

प्रस्तावना
राजपुताना राजपूतों की धरती पंजाब के दक्षिणी पश्चिम के क्षेत्र में स्थित है जो कि सिक्खों का घर है। यद्यपि सभी जगह राजपूतों के बहुत सारे ठिकाने थे जैसे कि जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा, बूँदी इत्यादि है जोकि सबसे महत्वपूर्ण थे । जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा और बुंदी यह क्षेत्र थे जो मध्यकाली, भारत की राजनीति के महत्वपूर्ण स्थानों में से एक थे । उदयपुर के राणों के इलावा लगभग सभी शासकीय राजपूत घरानों ने मुगलों की मनसबदारी प्रणाली को अपनाया । मुगल राज्य की सेवा करने के लिए अकबर के समय में ही लख्खी जंगल, जो कि दक्षिण पश्चिम के पंजाब में स्थित हैं, बीकानेर घराना की जागीर समझा जाता था, और उन्होनें इसे मुगलों की सेवा में समर्पित कर रखा था । इसमें कोई शंका नहीं कि राजपूत सिक्खों के तत्कालीन पड़ोसी थे । इसी प्रकार वह एक दूसरे के सम्पर्क में आते रहते थे । लेकिन इन दोनों लोगों के सम्बन्धों के बारे में बहुत कम जानकारी है । मजेदार बात यह है कि जितने भी इतिहासिक रचनाऐं लिखी गई हैं वह इन मामलों पर बिल्कुल शांत हैं । वर्तमान कार्य एक महत्वूपर्ण कोशिश है जो राजपूतों और सिक्खों के सम्बन्धां पर ध्यान देगी। खास करके 18वीं शताब्दी के समय के स्त्रोतों का भी इस्तेमाल किया जायेगा जो आज तक बिल्कुल अपरिचित रहे हैं।
पुरातन जन्मशाखियों के अनुसार ऐसी कई उदाहरणें मिलती है कि अपनी उदासियों (यात्राओं) के समय, गुरू नानक देव जी जो सिक्ख धर्म के संस्थापक थे, सिक्खों का बीकानेर राज्य में आगमन गुरू नानक देव जी के समय में ही हुआ था । गुरू नानक देव जी की यात्राओं (उदासियों) का जिकर भी बीकानेर राज्य में हुआ है।
राजपूताना राजपूतों की धरती पंजाब के दक्षिणी पश्चिम के क्षेत्र में स्थित है जो कि सिक्खों का घर है । यद्यपि सभी जगह राजपूतों के बहुत सारे ठिकाने थे जैसे कि जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा, बूँदी इत्यादि है जोकि सबसे महत्वपूर्ण थे । जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा और बुंदी यह क्षेत्र थे जो मध्यकाली, भारत की राजनीति के महत्वपूर्ण स्थानों में से एक थे । उदयपुर के राणों के इलावा लगभग सभी शासकीय राजपूत घरानों ने मुगलों की मनसबदारी प्रणाली को अपनाया । मुगल राज्य की सेवा करने के लिए अकबर के समय में ही लख्खी जंगल, जो कि दक्षिण पश्चिम के पंजाब में स्थित हैं, बीकानेर घराना की जागीर समझा जाता था, और उन्होनें इसे मुगलों की सेवा में समर्पित कर रखा था । इसमें कोई शंका नहीं कि राजपूत सिक्खों के तत्कालीन पड़ोसी थे । इसी प्रकार वह एक दूसरे के सम्पर्क में आते रहते थे । लेकिन इन दोनों लोगों के सम्बन्धों के बारे में बहुत कम जानकारी है । मजेदार बात यह है कि जितने भी इतिहासिक रचनाऐं लिखी गई हैं वह इन मामलों पर बिल्कुल शांत हैं ।
पुरातन जन्मशाखियों के अनुसार ऐसी कई उदाहरणें मिलती है कि अपनी उदासियों (यात्राओं) के समय, गुरू नानक देव जी जो सिक्ख धर्म के संस्थापक थे, राजस्थान में आऐ थे। फलस्वरूप सिक्खों का बीकानेर राज्य में आगमन गुरू नानक देव जी के समय में ही हुआ था । गुरू नानक देव जी ने अपनी जिंदगी के 25 वर्षों में (1497–1522) कई बड़ी–2 यात्राओं (उदासियों) देश–व

विदेश में की थी । गुरू जी ने ज्यादातर यात्राऐं पैदल ही की थी। उनकी इन चार उदासियों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान सिक्ख धर्म में माना गया है।[1] इन चार उदासियों का उदृेश्य विभिन्न–2 धर्मों के लोगों के धार्मिक विश्वास व धार्मिक स्थानों को जानना था, उन स्थानों के संतों व धार्मिक संस्थाओं, संघों को उपदेश देना था, तथा वह लोगों के धार्मिक अंध विश्वासों को दूर करना था । गुरू नानक देव जी की उदासियों का जिकर भी बीकानेर राज्य में भी हुआ है।[2] इन यात्राओं के समय भी गुरू नानक देव जी ने कई मध्यकालीन शहरों, क्षेत्रों और धार्मिक स्थानों जैसेः– पुश्कर, भटनेर, नौहर–बहादरा, बीकानेर, कौलायत, पोखकरन, जैसलमेर, मकराना, जोधपुर, खाटू, अमेर, अजमेर, चितौड़, आबू पर्वत की यात्रा की थी । वह हिन्दुओं के साथ–2 राजस्थान स्थित जैनियों के धर्म स्थानों पर भी गऐ।[3]

गुरू नानक देव जी दक्षिण पश्चिम की यात्रा करते हुए कोलायत में पहुॅचे जो कि बीकानेर के दक्षिण पश्चिम में स्थित एक प्राचीन शहर है, वहॉ पर गुरू नानक देव जी के पहुॅचनें पर उत्सव मनाया गया था।[4] आज भी वहॉ उत्सव मनाया जाता है । वहॉ पर सिक्खों का एक गुरूद्वारा भी स्थित है । वहॉ पर गुरू जी ने वैष्णवमत के लोगों के साथ और ब्राह्मणों के साथ संवाद किया, और उनको अपने गुरू भक्ति के उपदेशों से प्रभावित भी किया । श्री गुरू नानक देव जी ने गुरू भक्ति के सिद्धांत का प्रचार करते हुए कहा कि गुरू के बिना मनुष्य अन्धकार में डूबा रहता है। गुरू जी ने न केवल गुरू की महानता एवं महिमा पर अत्यधिक जोर दिया प्रत्युत उन्होने गुरू संस्था की स्थापना भी की । उन्होनें अपने देहान्त से पूर्व भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया जो गुरू अंगद के नाम से सिक्खों के दूसरे गुरू बने । यह कार्य सिक्ख धर्म के लिए अति महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ था । इससे सिक्ख धर्म को एक निश्चित नेतृत्त्व प्राप्त हुआ जिसका इस धर्म के विकास के इतिहास में सर्वोच्च महत्व है । सिक्ख धर्म में गुरू संस्था का अपना ही विशेष भावार्थ बन गया । गुरू का अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व एक केन्द्र बिंदू ;दनबसमनेद्ध के समान था जिसके ईद–गिर्द सिक्ख पंथ का शनैः शनैः उत्थान हो सका।[5] इस प्रकार ही गुरू साहिब जी ने अपने उपदेशों द्वारा हिन्दुओं तथा मुसलमानों के भेद–भावों को दूर करने के प्रयत्न किए । उन्होने यह भी प्रचार किया कि हिन्दू तथा मुसलमान भाई–भाई है और हिन्दुओं का परमात्मा तथा मुसलमानों का खुदा वास्तव में एक ही है । इस उपदेश से हिन्दुओं व मुसलमानों में सामाजिक मेल जोल कायम होने लगा वह अपनी पिछली शत्रुता भूल कर एक–दूसरे से प्रेम करने लगे। इस उपदेश से लोगों के बहुत से अन्धविश्वासों, खोखले रीति–रिवाजों का भी खण्डन किया । इसका परिणाम यह हुआ कि लोग अंधविश्वासी न रहे । वह सच झूठ के भेद को समझने लगे ।

गुरू जी ने उपदेश देते हुए यह भी भक्तों और संतों को कहा कि हमें जाति–पाति में विश्वास नही करना चाहिए, इस प्रकार जाति प्रथा का खण्डन किया । चैतन्य महाप्रभु, रामानन्द, कबीर, दादू, रविदास, तूकाराम तथा गुरू नानक साहिब ने तो नीच जाति के लोगों को अपने शिष्य भी बनाया था । इन भक्तों ने अपने शिष्यों को इकट्ठे बैठकर खाने–पीने का भी उपदेश दिया । इस से नीच जाति के लोगों का गुरू जी ने उद्धार किया । गुरू जी के उपदेशों के प्रभाव से उनके साथ समाज में भी अच्छा व्यवहार किया जाने लगा।

वहॉ के भक्तों व संतों के अपने श्रद्धालुओं को दान देने तथा गरीबों और दुखी लोगों की सहायता करने के उपदेश दिए । जिससे वहॉ के लोगों के समाज सेवा की भावना जागृत हो उठी। जिससे गुरू जी के उपदेश के समझते हुए अब लोग अनाथ बच्चों, विधवा स्त्रियों तथा अंगहीन व्यक्तियों की सहायता करने लगे । इन संतों व भक्तों के प्रभाव तले बड़े–2 राजाओं एवं अमीर लोगों ने गरीबों के लिए लंगर खोल दिए तथा दुखी लोगों के लिए दिल खोल कर दान देने लगे । जिस से संगत–पंगत व लंगर प्रथा को भी बढ़ावा मिला जो राजस्थान में पंजाब की तरह आज भी विद्यमान पाई जाती है ।

गुरू जी हिन्दुओं के साथ–2 राजस्थान में स्थित जैनियों के धर्म स्थानों पर भी गऐ । अजमेर के पास स्थित 'पुश्कर' (ब्रह्मा जी का मन्दिर) के स्थान पर उन्होनें हिन्दुओं को ईश्वर की ऐकता व ईश्वर का नाम जपने की प्रेरणा दी । आबू पर्वत के सुन्दर जैन मन्दिर में वह जैनी साधुओं संतों से भी मिले।[6] 'पुश्कर' में भी एक पौराणिक गुरूद्वारा भी स्थापित हैं। वहॉ का शासक शिवनाथ गुरू जी से बहुत प्रभावित हुआ वह परिवार सहित उनका सिक्ख बन गया । इस प्रकार गुरू जी बहावलपुर, सुल्तान से होते हुए वापिस पंजाब आ गऐ थे। इस यात्रा में उनको 5 वर्ष लगे थे ।

सिक्ख इतिहास के स्रोतों से यह पता चलता है कि सिक्खों का बीकानेर राज्य में आगमन गुरू नानक देव जी के समय से ही हुआ था । सिक्ख इतिहास को स्रोतों से यह भी पता चलता है कि गुरू नानक देव जी के पवित्र भजन राजपूताना में आरम्भिक काल से चलते आ रहे थे । खास करके उन संगीतकारों के द्वारा धार्मिक उत्सवों पर कीर्तन किया करते थे ।

16वीं शताब्दी के अंत में और 17वीं शताब्दी के शुरूआत में राजस्थानी रचनाओं में कई ऐसी रचनाऐं मिलती है जिसमें गुरू नानक देव जी के भजनों को देवनागरी लिपि में लिखा हुआ पाया गया है।[8] इससे यह सिद्ध होता है कि गुरू नानक देव की वाणी और उनका संदेश तत्कालीन राजपूतानों के लोगों से अपरिचित नहीं थे ।

सिक्ख इतिहास के गहन अध्ययन से हमें यह पता चलता है कि भक्ति लहर के दो ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति हुए है, जिनका नाम धन्ना जाट और पीपा राजपूत था जो राजस्थान से समबिन्धत
थे और उनका उनकी अपनी आध्यात्मिक कुशलता के कारण बहुत ख्याति प्राप्ति का भी सम्मान प्राप्त है।[9] उनकी रचनाओं को सिक्ख धर्म की धार्मिक रचनाओं में भी स्थान प्राप्त है।

गुरू नानक देव जी ने पीपाधाम की यात्रा की थी, जो कि गंगरौन क्षेत्र में स्थित है । जहॉ महान सन्त पीपा जी ने तपस्या की थी और गुफा में उनको आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति भी हुई थी । यहॉ से ही गुरू नानक देव जी फिर गंगरौन शहर गऐ थे । वहॉ पर गुरू जी को एक महान सन्त हरि जी मिले और उनको पीपा जी की गुफा में ले गए जहॉ पर पीपा जी अन्दरूनी ज्ञान की प्राप्ति कर रहे थे । वह अपनी आत्मा का उस सर्वशक्तिमान आत्मा से सुमेल कर रहे थे । हरि जी ने गुरू नानक देव जी को बड़ी ही श्रद्धा व प्यार के साथ सेवा की थी । तत्पश्चात् गुरू नानक देव जी ने खुश होकर उनको यह उपदेश दिया कि सांसारिक मोह माया को छोड़ कर अपना ध्यान उस महान अकाल सतनाम् वाहिगुरू की तरफ लगाना चाहिए ।

गंगरौन का पुराणिक किला आहू और कालीसिंधा नदियों के किनारों पर बना हुआ है, जो कि उत्तर से 4 किलोमीटर दूर झालावाड जिला राजस्थान में स्थित है।[10] सन्त पीपा जी की जन्म भूमि और उपदेशों का स्थान है, यहॉ पर ही नदियों का संगम स्थित है। उसका मकबरा, गुफा जिस में उसने तपस्या की थी और मन्दिर की अपनी सारी सानौसौकत आज भी देखने को मिलती है। उसका जन्म खिंची परिवार में हुआ था, उन्होनें गंगरौन किले में अपना राज्य स्थापित किया था ।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में पीपा जी के केवल दो दौहे ही हैं, परन्तु उन में से एक तुलनात्मक और दूसरा दार्शनिक पक्ष से काफी महत्वपूर्ण है। इसमें शरीर और ब्रह्मा के बारे में बड़ा सुन्दर और गहन विश्लेषण किया गया है । इस दौहे में पीपा जी कहते हैं कि मन्दिर, देवी देवताओं और चलने वाले जन्तु सभी मनुष्य के शरीर में रहते हैं । अगर कोई व्यक्ति पूजा या तपस्या करना चाहता है तो उसको किसी तरह से बाहरी साधनों की जरूरत नहीं है । उसको केवल अपने अन्दर झात मारने की जरूरत है । पूजा, सुगन्धि और आहुति (बली) का सारा समान इसके अन्दर ही है, अगर कोई अपने अंदर झात मारता है तो वह उनको नौ

तत्तों के खजाने को हासिल कर सकता है। उन्होनें कहा है कि प्रत्येक को अपने आप में देखने, खोजनें और अन्तर ध्यान की जरूरत है ।
पीपा जी इस सवौच्च व अंतिम–तत्त और सच्चाई की तरफ नर्मी के साथ झुके हुए हैं और कहते हैं कि इस अंतिम सच्चाई को केवल सच्चे गुरू की सहायता से ही प्राप्ति किया जा सकता है।[11]

परमारथ के कारणे, जिनको जीवन अन्त ।
पीपा सोई संत पुरूख, सोई सॉचो सन्त ।।
भलो बुरो सब एक है, जाके आदि न अन्त ।
ज्गहित रहि जो सेवये, पीपा सोई सन्त ।।

इन दोहों का इतना प्रभाव पड़ा कि राजस्थान में सिक्ख धर्म को मानने वाले निरगुण भक्ति की उपासना की तरफ झुक गऐ । उन्होनें पीपा जी को एक महान् भगत् माना है और जिस गुफा में उन्होनें अन्तरध्यान किया था, वहॉ पर श्री गुरू ग्रंथ साहिब का वर्णन किया था । वह उनके जन्म उत्सव व संगठित समारोहों में बड़े जोश व उत्साह से भाग लेते थे । वह पीपा जी के भक्ति गीत और गुरू बाणी का भी वर्णन करते थे।
पीपा जी के अनुसार ब्रह्मा जी प्रत्येक स्थान पर मौजूद है और सारी श्रृष्टि उसमें समाई हुई है। इस अन्तर ध्यान के समय उन्होनें ब्रह्मा जी को अपने शरीर में महिसूस किया और उन्होने अपने आप को जानने की प्रक्रिया की रचना की थी जो सिर्फ सन्त साहित्य के अध्यात्मिक पक्ष को ही सुशोभित नहीं करती बल्कि इसको सिक्खों के सर्वउच्च साहित्य ''श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी'' में स्वैभिमान भरा स्थान प्राप्ति है और यह बड़े सतिकार के साथ गुरू अर्जुन देव जी द्वारा इसको शामिल किया गया है । उनकी रचनाओं को सिक्ख धर्म की धार्मिक रचनाओं में भी स्थान प्राप्त था । 1604 ई0 में इन रचनाओं को गुरू अर्जुन देव जी द्वारा स्वीकृति प्राप्ति हुई, जब वह सिक्ख धर्म का ग्रंथ ''श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी'' का संक्लन करने जा रहे थे। इस प्रकार राजस्थान के इन दो व्यक्तियों (पीपा और धन्ना जाट) की रचनाऐं सिक्ख रचनाओं में स्थाई रूप से बस गई मानवता की भलाई के लिए।[12] यहॉ सभी जातियों को खुला निमंत्रण था । इनमें राजपूताने के लोग भी थे और उनको सिक्ख गुरूओं के विवेक बुद्धिमानी की जानकारी लेने के लिए निमन्त्रण दिया गया ।

किरत और बंदगी के मालक–शिरोमणि भक्त् धन्ना जाट

सच्चा विश्वास, दृढ़ ईरादे, सख्त घालणा जैसे शब्द है, जो मनुष्य की प्रत्येक मंजिल को सर कर देते हैं । कई ऐसे महापुरूष ब्रह्म ज्ञानी, भक्त हुऐ जिन्होने अपने सच्चे विश्वास सदका एक सादे जीवन में उठ के रूहानी ज्ञान प्राप्त किया । ऐसे महापुरूषों में भक्त धन्ना जाट भी हुए जिन्होनें अपना जीवन किसानी से शुरू करके और भक्ति की मंजिल प्राप्त करके सर्वउच्च स्थान प्राप्त किया । नानकशाही कैलेंडर के मुताबिक भक्त् धन्ना जाट का जन्म 21 अप्रैल 1473 बिक्रमी, 1416 ई. को राजस्थान के टोंक जिले के गॉव धुआन में हुआ । यह गॉव देवली से लगभग 32 किलोमीटर दूर है । देवली बूँदी से अजमेर को जाते समय रास्ते में आती है । एक शाखी भाई गुरूदास की रचनाओं में भी मिलती है, [13] जिसमें भाई गुरूदास जी लिखते हैंः–

ब्राह्मण पूजै देवते धन्ना गऊ चरावणि आवै ।
धन्ने ढ़िठा चलितु ऐहु पुछै ब्राह्मण आख सुनावै।
ठाकुर की सेवा करैं, जो ईच्छै सोई फलु पावै।
धन्ना करदा जोदडी मैं भी देह एक जे तुधु भावै ।
पत्थर एकु लपेटि करि दे धन्ने नौ गैल छुड़ावै ।
ठाकुर को नाहवालि कै छाहि रोटी लै भोग चढावै ।
हाथ जोडि मिनति करै पैरी पै पै बहुत मनावे ।
हऊ भी मुहु न जुठालसा तु रूठा मैं किहु न सुखावै।
गोसाई परतखि होई रोटी खाई छाहि मुहि लावै ।
भौला भाऊ गोबिन्द मिलावै ।

जो प्रिय चतुरदास, प्रेम अबोध के करता दरबारी दास ने अपनी रचनाओं में दी, इस समय वह प्रसिद्ध है। जिस अनुसार पंडितों की तरफ से की जाती पूजा को देख के इनमें भक्ति की लगन पैदा हुई । पंडित जो प्रतिदिन मंदिर में ठाकुरों की पूजा करते थे, वह पंडितों से ठाकुर की मांग करने लगे । भक्त धन्ने की जिद् के आगे झुकते पंडितों ने इस को एक बेघड़त पत्थर दे दिया और इसकी पूजा करने का उपदेश दिया ।
पंडितों ने भक्त जी को यह भी कहा कि वह इस पत्थर को भोग लगाने के बाद ही आप भोजन करेंगे । जब धन्ना भक्त पत्थर को भगवान मान कर भोजन का भोग लगाने लगे तो पत्थर न भोग न लगाया । कहते है कि भक्त धन्ने ने भी खाना–पीना छोड़ दिया और भगवान् को कहा जब तक आप भोग नहीं लगाते, तद तक मैने कुछ नहीं खाना । बताते है कि आखिर परमात्मा को भक्त धन्ने की श्रद्धा और लगन के आगे झुकना पड़ा। भक्ति करते–करते धन्ना भक्त को यह ज्ञान हुआ कि भक्त धन्ने ने पंडित को कहा कि मुझे अनुभव हुआ है कि भगवान् एक मूर्ति नही है, वह सारे ब्रह्मांड में समाया हुआ है । भक्त् की मूर्ति पूजा के विरूद्ध हुए और वह सर्व व्यापक निरंकार के पूजक हुए। यह बात उनकी बाणी से स्पष्ट होती है । उन्होनें भी रामानंद, कबीर, नामदेव जी से भी ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया । उन्होने 42 शब्द लिखे जिन में से तीन शब्द गुरू ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है।[14] भक्त जी ने विलक्षण तौर पर आरती के स्थान पर आरता उच्चारण किया ।

गोपाल तेरा आरता जो जन तुमरी करते,
तिन के काज सवारता।[15]

उनके दृढ़ ईरादे ने सिद्ध कर दिया कि मनुष्य भक्ति भावना के साथ प्रत्येक मंजिल प्राप्त कर सकता है। पाखण्ड, वहमा–भरमा के साथ कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता । परमात्मा के मेल के लिए आत्मिक ज्ञान की जरूरत है न कि मूर्ति पूजा की । इन्होने किरत करते–2 ही मंजिल प्राप्त कर ली थी । इस प्रकार धन्ना जाट जो राजस्थान का था, उसके विचार भी सिक्ख समुदाय व सिक्ख गुरूओं की विचारधारा से काफी मिलते जुलते हैं। धन्ना भक्त् से वहॉ के सिक्ख समुदाय के लोगों ने शिक्षा प्राप्त करके सिक्ख धर्म को ओर ज्यादा आगे बढ़ाने में प्रोत्साहन दिया।[16]
गुरू गोबिन्द सिंह जी जब दक्षिण की तरफ गए थे तो वह बीकानेर से होकर गए थे और सहावा जिला चुरू में भी गुरू जी थोड़े समय के लिए रूके थे । गुरू जी ने दुदु में भी विश्राम किया था जो दादूपंथियों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था । यहॉ दादूपंथी संत जेत राम ने गुरू जी और उनके साथियों का सतिकार किया और उनके साथ विचार विमर्श भी किया गुरू गोबिन्द सिंह जी ने जेत राम को बताया कि हमेशा अहिंसात्मक बने रहना भी मानवता नहीं है बुराई के आगे झुकने की बजाए उसे रोकना चाहिए । गुरू गोबिन्द सिंह और जेत राम के बीच की यही बातचीत आगे चलकर दादूपंथ के इतिहास में परिवर्तन लेकर आई ।
1658 के उत्तराधिकारी युद्ध के पश्चात सम्राट औरंगजेब सिक्खों के धार्मिक मामलों में काफी दखलअंदाजी देने लगे थे। औरंगजेब की इच्छा थी कि सिक्ख पंथ की गुरूगद्धी पर उसका मनपसन्द व्यक्ति ही गद्धी पर बैठे । सबसे पहले उसने गुरू हरिराय को मुगल दरबार में बुलाया, गुरू जी ने अपनी नुमाईनंदगी के लिए अपने बेटे राम राय को मुगल दरबार में भेज दिया । राम राये ने वहां मुगल दरबार में कुछ करामाता दिखा कर और गुरू नानक

देव जी की 'बाणी' का एक शब्द बदल कर औरंगजेब की तसल्ली करवा दी थी, परन्तु ऐसा करने के कारण गुरू हरि राय जी उससे काफी नाराज हो गये थे, उन्होनें उनको छोड़ कर अपने छोटे पुत्र हरि कृष्ण को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था । औरंगजेब ने रामराय को देहरादून की जमीन जागीर के रूप में प्रदान की थी।[17] स्पष्ट रूप में वह उसे पूर्व अवस्था में लाने के लिए और सिक्ख धर्म के बढ़ते प्रभाव पर नियन्त्रण रखने के लिए उसका इस्तेमाल करना चाहता था, उसने अपने इस उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए सिक्ख समुदाय के धार्मिक कार्यों में दखल देना शुरू कर दिया था । औरंगजेब ने गुरू हर कृष्ण जी को मुगल दरबार में समन भेज कर बुलाया चाहे वह एक बालक थे और कोई भी गुनाह नही किया था । सिक्ख इतिहास में यह व्याख्या है कि दिल्ली की यात्रा के दौरान गुरू हरिकृष्ण जी जयपुर के मिर्जा राजा जय सिंह के महल में रूके थे । यह स्रोत हमें बताता है कि जयपुर की महारानी ने गुरू जी की अच्छी तरह से महमान निवाजगी की थी और सभी प्रकार की सेवाऐं उनको प्रदान की गई।[18]

औरंगजेब ने गुरू तेग बहादुर जी को नवम्बर 1665 में कैद किया और उन्होने दिल्ली ले आया । यह कहा जाता है कि जयपुर के राजा राम सिंह ने गुरू जी के लिए मध्यस्थता की और उनको मुगलों की कैद से इस शर्त पर छुड़वाया कि वह पंजाब वापिस जाने की बजाऐ । वह अपने उत्तर–पूर्व में अपना उपदेश देंगे।[19] गुरू तेग बहादुर जी कुछ समय के लिए उत्तर–पूर्व में ठहरे थे और वह उत्तर–पूर्व में धर्मार्थ कार्य सम्बन्धी ठहरे थे। उन्होने वहॉ अपना धर्मार्थ कार्य किया जिसके बारे में बिहार, बंगाल और आसाम के सूबे सम्बन्धी व कर्तव्य सम्बन्धी सारी जानकारी अच्छी तरह से इतिहास के विद्यार्थी जानते हैं।

दसवें पातशाह श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी जब दक्षिण की तरफ गए तो वह बीकानेर से होकर गए थे, उन्होनें वहॉ वैष्णवमत के लोगों के साथ और ब्राह्मणों के साथ संवाद किया और अपने उपदेशों से उनको प्रभावित किया । गुरू गोबिन्द सिंह जी ने दो बार राजपूताने में यात्रा की और कई राजा महाराजाओं को दर्शन दिए । पहली बार गुरू गोबिंद सिंह जी सिरसा से तत्कालीन बीकानेर रियासत के गांव जसाणा, नौहर, भादरा, साहवा, सिंघाणा, पुष्कर राज तीर्थ, दादू द्वारा इत्यादि स्थानों पर पधारे और दूसरी बार आगरा से धौलपुर, जयपुर, सांवरदा, अजमेर, मेडता, जोधपुर, चितौड़ इत्यादि स्थानों पर पधारें । पुष्कर संवत् 1762 बिक्रमी, बैराट, बाधौर सं. 1763 वि. जयपुर, अजमेर, जोधपुर सं. 1764 वि. में पधारे थे । इन जगहों पर उनके पधारने के प्रमाण है, और कई राज घरानों में उनकी बख़्शी हुई वस्तुऐं सुरक्षित हैं।[20]

उनके समकालीन राजा जय सिंह, अजीत सिंह और अमर सिंह, महाराणा उदयपुर से उनकी मुलाकात का परिणाम राजपूताना की तत्कालीन इतिहासक 'ट्रिपल लीग' के रूप में प्रकट हुए।[21] आगरा में मुगल बादशाह बहादुर शाह ने उन्हें बहुत कीमती खिल्लत (सरोपा) भेंट किया था।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी का स्वर्गवास दक्षिण में नादेड़ के स्थान पर हुआ । उन पर सरहिन्द के फौजदार वजीर खॉ के दो पठान जासूसों ने हमला करके उन्हें घायल कर दिया था । ज्योति जोत समाने से पहले उन्होनें पंजाब में दोषियों को दंडित करने के लिए सिक्खों के नाम हुक्मनामें देकर पॉच सिक्खों के साथ बंदा सिंह बैरागी को रवाना कर दिया था । जिसे सिक्ख इतिहास में बंदा सिंह बहादर के नाम से याद किया जाता है।

अन्तिम समय से पहले गुरू गोबिन्द सिंह जी ने एक ओर ऐतिहासक फैसला लिया । अपने लिखे ग्रन्थों को नजर अन्दाज करके गुरू अर्जन देव जी द्वारा संपादित 'आदि ग्रन्थ'' को गुरू गद्धी सौंपी और देहधारी गुरूओं की प्रणाली समाप्त कर दी । उनके मुख वाक्य को 'पंथ प्रकाश'' के लेखक ज्ञान सिंह ने इस प्रकार अंकित किया हैः–

'आज्ञा भई अकाल की–तबै चलायो पंथ ।
सब सिक्खन को हुक्म है–गुरू मानयों ग्रंथ ।
गुरू ग्रंथ की मानयों–प्रगट गुरां की देहि ।
जो प्रभु को मिलवों चहे–खोज शब्द में लेहि।[22]

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने आत्म रक्षा के लिए सिक्खों को किरपान रखना अनिवार्य कर दिया था। साथ में यह दिशा निर्देश भी दिया कि यह केवल रक्षार्थ है तभी मयान से निकले जब कोई और चारा न रहा हो । उन्होने फारसी में लिखा हैः–

चूँ कार अज हमह हीलते दर गुजशत ।
हलाल अस्त बुर्दन बशमशीर दस्त ।[23]

उपरोक्त अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि प्रारम्भ से ही सिक्ख गुरूओं को संबंध राजस्थान के लोगों के साथ रहा है । गुरू नानक देव जी अपनी धर्म प्रचार यात्राओं के दौरान राजस्थान से ही गुजरे थे । उनकी इन यात्राओं की गवाही के तौर पर कोलाईत में उनके नाम का गुरुद्वारा भी मौजूद है । बाद में गुरू अर्जुन देव जी ने सिक्ख धर्म का संपादन करते समय राजस्थान के दो भगतों–पीपा जी व धन्ना जी की बाणी को भी सिक्ख धर्म ग्रंथ में शामिल किया।

सिक्ख इतिहास के स्रोतों से यह जानकारी मिलती है कि जयपुर के राजघराणों के साथ सिक्खों के आठवें व नौवे गुरू के अच्छे संबंध थे । 1706–1707 ई. में दक्षिण को जाते समय गुरू गोबिन्द सिंह जी राजस्थान से ही गुजरे थे । उनकी याद को समर्पित कई गुरूद्वारे राजस्थान में पाए गए है । सार यह है कि राजस्थान के लोग सिक्ख गुरूओं की विचारधारों से अनभिज नहीं थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. गंडा सिंह, गुरू नानक की विजिट टू वैस्ट ऐशिएन कंटरीज, पंजाब हिस्टरी कॉफ्रैन्स प्रोसीडिंगज, चतुर्थ सैसन, मार्च 1969, पृष्ठ 188.
2. मेहरबान, जन्मशाखी श्री गुरू नानक देव जी (सच्च खण्ड पौथी), डॉ. कृपाल सिंह खालसा कालज, अमृतसर–1962 पृष्ठ 331–356
3. राजस्थान हिस्टरी कांग्रेस (परीसीडिंगज वोल्यूम XXIV, सुजानगढ़ सैसन, दिसम्बर 2008, पब्लिकेशन, डॉ. एस.पी. व्यास, सैक्टरी, राजस्थान हिस्टरी कांग्रेस, इतिहास विभाग जे.ऐन.वी. विश्वविद्यालय, जोधपुर
4. डॉ. गंडा सिंह, ऐ सोरट हिस्टरी आफ दी सिक्ख, पंजाबी विश्व विद्यालय, पटिआला–1989, पृष्ठ 46.
5. डॉ. इन्दु भूषण बैनर्जी, ऐवोजयूसन ऑफ खालसा, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटिआला, 20 जून, 1947, कलकता, पृष्ठ 11.
6. एस.पी. सभरवाल, हिस्टरी ऑफ दी पंजाब, 22 के.दूगल एण्ड कंपनी, ऐजूकेशनल पब्लिकेशनज, जालंधर, 1997–98, पृष्ठ 21–22.
7. हुक्मनामा, डॉ. गंडा सिंह, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटिआला, 1967 पृष्ठ 13, 15, 16 गंडा सिंह, मैकहिज–आई–तवारिख–आई–सिक्खन, सिक्ख इतिहास सोसाईटी, अमृतसर, 1949, पृष्ठ 83.
8. विनानद ऐम.कैलीवर्ट, मनुस्करिपटस, ए परीसीअस गोल्डमाईन, दी जरनल ऑफ रिलिजीअस स्टॅडीज, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटिआला, XX-II, 1993 पृष्ठ 158–173.
9. भाई गुरदास की 'वारा' पृष्ठ 10, 13, 23, 15, 24, 5.
10. डॉ. एस.पी. व्यास, सैक्टरी, राजस्थान इतिहास कांग्रेस, जे. एन.पी. विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान इतिहास कांग्रेस परोसीडिंगज वोल्यूम XXIV, सुजानगढ़ सैसन, दिसम्बर 2008.

11. वही, राजस्थान इतिहास कांग्रेस परोसीडिंगज वोल्यूम ग्प्टए सूजानगढ़ सैसन, Dec. 2008.
12. श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी, धन्ना भगत् व पीपा भगत् व पीपा भगत् के तीन भजनों को इसमें शामिल किया गया है, पृष्ठ 487–68, 695.
13. भाई गुरदास की 'वारा'' पृष्ठ 45, 56.
14. जसबीर सिंह नूरपूर, पंजाबी अजीत समाचार धर्म व विरसा पृष्ठ–।, दिनांक 20 अप्रैल 2009.
15. वही, पृष्ठ–1, दिनांक 20 अप्रैल 2009.
16. गुरू गोबिन्द सिंह, राजपूताना, सरदार प्यारा सिंह बैंस, रीटायर्ड राजस्थान पुलिस अफसर, बीकानेर, विस्तार सहित कार्य इस प्रौजैक्ट पर किया है ।
17. तीर्थ सिंह ढिल्लों, धर्म और विरसा पंजाबी अजीत समाचार पत्र पृष्ठ–।।, दिनांक 31 दिसम्बर 2011.
18. डॉ. गंडा सिंह, ऐ सोरट हिस्टरी आफ दी सिक्ख, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटिआला, 1989, पृष्ठ 46.
19. वही, पृष्ठ 46, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटिआला 1986.
20. सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश, भाषा विभाग पंजाब, पटिआला, 1971, पृष्ठ 642–45.
21. केशर सिंह छिबड़ बंशावलीनामा, राजेश्वीर सिंह, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, 2001, पृष्ठ 62–63,
22. ज्ञानी ज्ञान सिंह, तवारिख गुरू खालसा, भाषा विभाग पंजाब, पटिआला, 1970 पृष्ठ 634.
23. एस.के.भूयान, गुरू तेग बहादुर आसाम में पंजाब पास्ट एण्ड परेजेन्ट, अप्रैल 1975, पृष्ठ 125–129 अलाऊदीन, ईबारटनामा, श्री गुरू तेग बहादुर, फारसी स्रोत, प्यारा सिंह, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, 1970, पृष्ठ 634.